VISION IAS

www.visionias.in

12 SEP 2019

SUBJECT:		Test Code:	1253
Name of Candidate	Ravi Kumar Sihag		
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	168117
Center	MN	Date	12 09 19

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नही मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

1/8-B, 2nd Floor, Building- Apsara Arcade, Near Gate-7 Karol Bagh Metro Station, Pusa Road, Karol Bagh, Delhi – 110005

EVALUATION INDICATORS

1. Alignment Competence
2. Context Competence
3. Content Competence
4. Language Competence
5. Introduction Competence
6. Structure - Presentation Competence
7. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

"प्रतिमाओं नहीं, आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता ही समय की मांग है।"

प्रतिमाओं का निर्माण क्युँ किया जाता है? क्यों विश्व में विशालकाय मूर्तियाँ बनाने की होड़ मची हुई है? यह कलाकारों की मानसिक सृजना और शारीरिक अभ्यास का परिणाम ही नहीं है, इसके अन्य भी उद्देश्य होते हैं। प्रतिमाओं को मुख्य रूप से जनसामान्य को प्रेरणा देने, किसी अलौकिक या लौकिक व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धाभाव को प्रकट करने और किसी महान व्यक्तित्व के कारनामों को हृदय में संजोये रखने व उनके आदर्शों के अनुगमन को उत्प्रेरित करने के उद्देश्य से निर्मित किया जाता है।

उपर्युक्त सभी सुउद्देश्य यदि विफल हो जाये तो क्या होगा? क्या हो लोग प्रतिमा की पूजा निष्क्रिय भाव से करें? प्रतिमा के विभिन्न प्रकारों व उनसे उत्पन्न मूल्यों का जनता पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है? किन स्तरों पर प्रतिमाएं व

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उनके आदर्श व्यक्तियों को प्रेरित करते हैं? केवल प्रतिमा पूजन से क्या समस्याएँ पैदा होती हैं और आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता इन समस्याओं का समाधान किस प्रकार कर सकती हैं? उपर्युक्त सवालों के माकूल उत्तर ढूंढने के लिये उचित विश्लेषण आवश्यक है।

प्राचीन काल से ही संपूर्ण विश्व में प्रतिमाओं का निर्माण होता रहा है। भारत में भी विभिन्न धर्मों में मूर्तियाँ बनती रही हैं जैसे- महात्मा बुद्ध आदि की मूर्ति, महावीर स्वामी, कृष्ण, राम आदि भगवानों की मूर्तियाँ। दरअसल, धर्मों में बिना छवि के उपासना, अर्चना, भक्ति आदि का आनंद न मिल पाने के कारण इन प्रतिमाओं का विकास हुआ। दूसरा उद्देश्य यह था कि साधारण जनसामान्य को समझाने व धार्मिक शिक्षा के लिये एक प्रेरणा स्रोत के रूप में ये मूर्तियाँ कार्य करती थी।

आधुनिक युग में धार्मिक प्रतिमाओं के बजाय धर्मनिरपेक्ष व इहलौकिक कलाओं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की शुरूआत हुई। इसी स्वरूप में अमेरिका की 'स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी', रूस में लेनिन, स्टालिन की मूर्तियाँ, भारत की हालिया 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' आदि विकसित हुई हैं। उपर्युक्त प्रयासों व उदाहरणों के बावजूद आज के युग में ये प्रतिमाएँ अपने उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रही हैं।

धार्मिक स्तर पर लोग अनेक भगवानों की प्रार्थना करते हैं किन्तु उनके बताये गये मूल्यों को अपनाने से परहेज करते हैं। भगवान गणेश ने स्वयं चूहे को अपना वाहन बनाकर प्रकृति से मानव के सह-संबंध का उदाहरण पेश किया किन्तु यही मानव आज गणेश चतुर्थी के अवसर पर गणेश जी की विशाल मूर्तियों को जल में विसर्जित कर प्रकृति का विनाश कर रहा है।

राजनीतिक स्तर पर अनेक दल अपने कार्यालय के बाहर महात्मा गांधी, विवेकानंद, सरदार पटेल जैसे स्वतंत्रता आदर्शों की

सुंदर मूर्तियों को सुसज्जित करते हैं किन्तु स्वयं ये दल इन महापुरुषों के मूल्यों- यथा राष्ट्र विकास, अहिंसा, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी से कोसों दूर हैं। राजनीति का अपराधीकरण आज आम हो गया है। जहाँ महात्मा गाँधी ने अपने आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता से विशाल राष्ट्रीय आंदोलन खड़ा कर दिया, वहीं आज उसी राजनीति को मृतप्राय समझा जाता है। हिन्दी लेखिका 'मन्नू भंडारी' ने अपने उपन्यास 'महाभोज' में इन्हीं राजनीतिक विद्रूपताओं का पर्दाफाश किया है।

सामाजिक स्तर पर भी भगवान राम, मोहम्मद साहब, ईसा मसीह जैसे महापुरुषों या भगवानों की पूजा करने वाला समाज आज भी भेदभाव, जाति प्रथा, रंगभेद, मॉब लिंचिंग, पितृसत्तात्मकता जैसी समस्याओं से ग्रसित है, जबकि ईसा मसीह ने कहा था कि - "सबसे प्रेम करो। प्रेम सब पर विजय प्राप्त कर सकता है। शत्रु से भी प्रेममूलक

व्यवहार करो।" (बाइबल - मैथ्यू 5:12)

इसी प्रकार 'मोहम्मद साहब' ने जिस बंधुत्व व समतामूलक समाज की बात की थी, वह आज के समाज से गायब है। "थॉमस पिकेटी ने अपनी पुस्तक "कैपिटल इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी" में विश्व में बढ़ती असमानता की भयावहता उजागर की है।"

तुलसीदास ने भी राम के राज्य अर्थात रामराज्य का वर्णन कुछ इस प्रकार से किया है-

"रामराज्य राजत सकल, निरत वेद पथ लोग,
चलहिं सदा, पावहिं सुख, नहीं भय सोक न रोग।"

- आर्थिक स्तर पर जहाँ चीन जैसे देश स्वयं को मार्क्सवाद व साम्यवाद के पैरोकार का दर्जा देते हैं, वहाँ पर भी आर्थिक असमानता व्याप्त है। भारत में 'विश्व असमानता रिपोर्ट' के मुताबिक 2016 में भारत के शीर्ष 1% लोगों ने 73% पूंजी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कमाई जबकि इस वर्ष में देश में कबीर की 500 वीं बरसी पर जगह-जगह उनकी प्रतिमाएँ बनाकर सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा था -

"साईं इतना दीजिए, जामैं कुटुम्ब समाय,
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु भी भूखा न जाय।"

विश्व स्तर पर एक अन्य आयाम के रूप में व भारत में भी व्यक्तिपूजा व उनकी प्रतिमाओं का पूजन आम हो रहा है। उनके आदर्शों पर कोई भी चलने से कतरा रहा है। आतंकी समूहों, जैसे - आई.एस.आई.एस हो या अल-कायदा, सभी स्वयं को इस्लाम का अगुआ बताते हैं जबकि उसके वास्तविक आदर्शों पर कोई नहीं चल रहा।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन बताता है कि कोरे प्रतिमा पूजन, उसके प्रति प्रतिबद्धता रखने से आधुनिक समस्याएँ बढ़ेंगी ही, उनका निवारण नहीं होगा ; जबकि उन्हें उन प्रतिमाओं

के आदर्शों पर आस्था, प्रतिबद्धता व श्रद्धा रखने से ज़रूर हम आमूलचूल परिवर्तन कर पायेंगे।

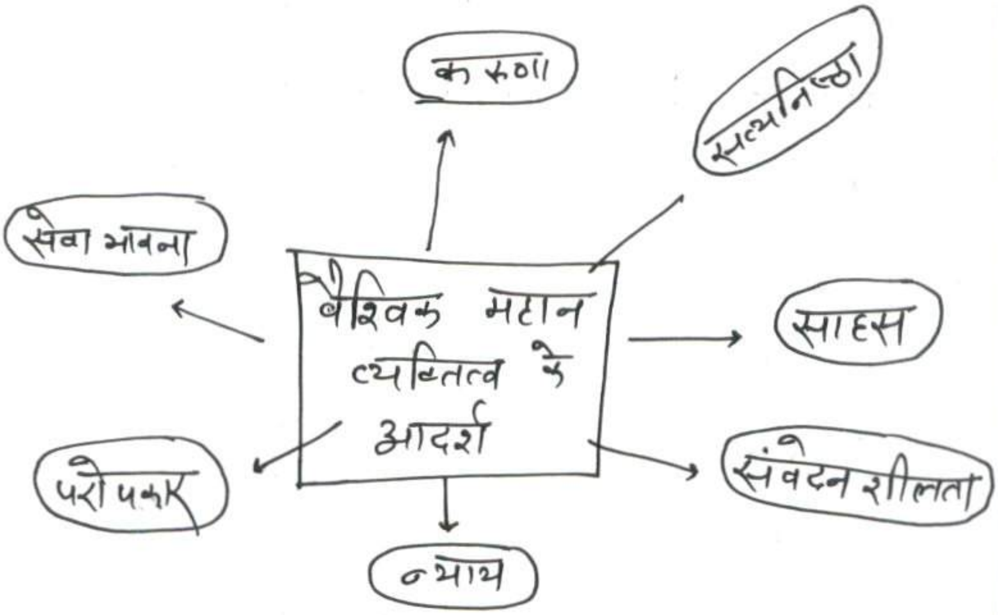

उपर्युक्त सभी आदर्शों का विवेचन करें तो हम यही पाते हैं कि विश्व के जितने भी महान व्यक्तित्व हैं; जिनकी महानता के कारण ही उनकी प्रतिमाएँ स्थापित की हैं- वे एक बात साझा करते हैं। वह बात यह है कि ये सभी महापुरुष जन्मजात महान नहीं बने हैं। इनकी महानता इसी बात में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

है कि ये अपने आदर्शों से टस से मस नहीं हुए। न विवेकानंद अपने कर्मवाद से विचलित हुए, न अब्राहम लिंकन अपने साहस व सत्यनिष्ठा से, न गांधी अपने अहिंसा व सत्याग्रह से विचलित हुए तो न ही नेल्सन मंडेला अपने समानता के आदर्श से। यही प्रतिबद्धता ही इन व्यक्तियों को महान बना पाई है। राष्ट्र के प्रति अटूट प्रेम, साहस, दृढ़ता जैसे आदर्शों के कारण ही सरदार पटेल की विश्व में सबसे ऊँची प्रतिमा बनाई गई है।

दूसरे स्तर पर ये प्रतिमाएँ केवल 'साधन' हैं, 'साध्य' है - जनकल्याण व न्याय, समानता, स्वतंत्रता जैसे आदर्श। आज अगर भारत सरकार भारतीय संविधान के प्रति प्रतिबद्धता रखती है तो इसका सीधा अर्थ है कि वह जनकल्याणकारी राज्य के निर्माण हेतु न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व जैसे आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आज के विश्व, राष्ट्रों व समाजों में जितनी भी समस्याएँ है, सबका समाधान आदर्शों की प्रतिबद्धता द्वारा हो सकता है। जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक इमैनुएल कांट ने कहा था कि नैतिक मूल्यों व आदर्शों के प्रति शर्तरहित प्रतिबद्धता ही विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, पर्यावरणीय, मनोवैज्ञानिक सभी स्तरों पर आदर्श आवश्यक है। विश्व की असमानता की समस्या समता के आदर्श से हल होगी तो आतंकवाद की समस्या अहिंसा के आदर्श से। प्रशासन में भ्रष्टाचार, लालफीताशाही व भ्रष्टाचार की समस्या ईमानदारी, सत्यनिष्ठा व समानुभूति जैसे आदर्शों से प्रेरित होगी तो विश्व में शरणार्थी समस्या मानववाद के आदर्श से हल हो पायेगी।

भारत के सन्दर्भ में भी सहिष्णुता, प्रेम जैसे आदर्श हालिया मॉब लिंचिंग को समाप्त करने में मददगार साबित

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हो सकते हैं वहीं संवेदना, सेवा, परोपकार, न्याय एवं समता जैसे आदर्श ही लैंगिक व वर्गीय न्याय की प्राप्ति में मददगार साबित हो सकते हैं। आज के समय में बिल एंड मेलिंडा गेट्स, विप्रो आदि सभी परोपकारी संस्थाएँ इन्हीं आदर्शों से प्रेरित है।

आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता न केवल समस्याओं का समाधान करती है बल्कि प्रतिबद्धता धारण करने वाले व्यक्ति को भी बहुआयामी लाभ पहुँचाती है। प्रथम स्तर पर यह उस व्यक्ति को दुविधामुक्त जीवन प्रदान करती है, द्वितीय स्तर पर उसे जनता में सम्माननीय स्थान प्राप्त कराती है। तीसरे स्तर पर उसे सार्थकता प्रदान करती है। मशहूर शायर कुंवर बेचैन ने कहा भी है-

"तुम्हारे दिल की चुभन जरूर कम होगी
किसी के पाँव का काँटा निकालकर तो देखो।"

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

चर्चा का अंतिम मुद्दा यह है कि आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता किस प्रकार लायी जाये? दरअसल इस बात का उत्तर बहुआयामी प्रयासों में छिपा है। एक नैतिक मूल्यों युक्त शिक्षा, जिसमें आदर्श व्यक्तित्वों के साथ, साहित्य व ललित कलाओं का सामंजस्य हो, के साथ-साथ जन-जागरूकता फैलानी होगी। इसी के साथ-साथ विख्यात या प्रसिद्ध व्यक्तियों पर जिम्मेदारी लानी होगी कि वे अपने व्यवहारानुरूप आदर्श तय करें। कानून व संहिताओं के स्तर पर तो अनिवार्य प्रयास करने ही होंगे।

अतः उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट है कि आज के समय की समस्याओं का समाधान इस बात में छिपा है कि नैतिक आदर्शों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का स्तर क्या है। इसी प्रकार केवल प्रतिमाओं के प्रति आस्था, श्रद्धा, प्रतिबद्धता को नकारा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जाना भी उचित नहीं है क्योंकि ये वे माध्यम है जिनसे आदर्श ~~प्रक्ष~~ प्रक्षेपण का कार्य शीघ्रता व सहजता से किया जा सकता है। किसी को अहिंसा का पाठ पढ़ाना आसान हो सकता है यदि महात्मा गांधी का उदाहरण साथ हो। साथ ही, ये प्रतिमाएँ इन आदर्शों की प्रतिबद्धता की सफलता को साबित कर चुकी है। अन्ततः आदर्शमूलक व्यक्तित्वों को सम्मान देकर उनके बताये आदर्शों पर चलकर ही वर्तमान समय में कल्याण, आनंद व सार्थकता युक्त जीवन को प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि -

"आदर्श ही जीवन के वास्तविक कल्याण के मार्ग हैं।"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

"असमानता का निकृष्टतम रूप असमान चीजों को समान बनाने का प्रयास करना है।"

"समय मांगता है मुझसे हिसाब,
पढ़े क्यों नहीं? नहीं है इसका जवाब मेरे पास,
तुमने अपनी वर्जनाओं से काट ली थी मेरी जिह्वा,
मेरे होंठ ही सिल दिये थे
मेरे कानों में जलता शीशा भी उड़ेल दिया था,
तुम्हारी इस करनी पर,
मेरी इन धमनियों में दौड़ रहा है खौलता लहू,
मेरी जगह पढ़ेंगे मेरे बच्चे ज़रूर।"

साहित्य में दलित विमर्श की धारा से ली गई पंक्तियों में विभिन्न दलित समाजों में परंपरागत रूप से थोपी गई सामाजिक बाध्यताओं पर आक्रोश व्यक्त किया गया है। जब आधुनिक युग में उनसे पढ़ने लिखने जैसी क्रियाएँ न करने के बारे में पूछा जाता है तो यह उनकी असमानताओं पर व्यंग्य करने

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के समान है क्योंकि आज के समय में उनको शिक्षा के सम मानकों पर तौलना उनके साथ हुए ऐतिहासिक भेदभाव को भुलाना है। इसी प्रकार एक दिव्यांग व्यक्ति को यदि सामान्य या अस्थाई रूप से योग्य व्यक्ति (Temporarily abled person), ~~कह सकते हैं~~ के साथ दौड़ लगाने को कहा जाये तो यह उपहास होगा, व्यंग्य होगा, चोट होगी उस दिव्यांगता पर; वह दिव्यांगता जो उसे प्राकृतिक रूप से मिली है।

दरअसल, प्रकृति के रूप में सभी जीव एक दूसरे से भिन्नता रखते हैं। दुनिया में लाखों प्रजातियाँ है। इन प्रजातियों के स्तर पर भी प्रजातिय भिन्नता, अन्तः प्रजातीय भिन्नता व एक प्रजाति के स्तर पर भी आनुवांशिक विविधता पाया जाना आम है। इन्हीं विविधताओं से भिन्नताओं को जन्म मिलता है और यही भिन्नताएँ जब सामाजिक ताने बाने में जुड़कर पृथकता व स्तरीकरण का बोध कराने लगती हैं तो इससे

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

असमानता का जन्म होता है।

विश्व में असमानता के रूपों पर चर्चा करें तो ये दृष्टिकोण की असमानता अधिक है, वास्तविक कम। उदाहरण के लिये 'सेक्स' की जैविक धारणा जब जेंडर की समाजशास्त्रीय अवधारणा में बदली तो इसे लैंगिक पूर्वाग्रह, पितृसत्तात्मकता जैसे तत्व पनपे और महिलाओं को अधीनस्थ स्थिति प्राप्त हुई।

उसी प्रकार जाति की अवधारणा भी वर्ण-व्यवस्था के इसी मिथक पर आधारित है कि फलाँ वर्ण का जन्म भगवान ब्रह्मा के निश्चित अंग से होने के कारण उसका स्थान उच्च या निम्न होगा।

आर्थिक रूप से दिखाई देने वाली गरीबी का एहसास भी तब होता है जब उसे अमीर के सम्मुख वंचना का एहसास होता है वरना प्राचीन काल में आदिमानव तो एक समतामूलक समाज में रहते थे और शायद आज के गरीब को उनसे अधिक सुविधाएँ

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मिलती होगी।

उपर्युक्त चर्चा के बाद शीर्षकानुसार यह बताया जा सकता है कि किस प्रकार असमानता का निकृष्टतम रूप असमान चीजों को समान बनाने का प्रयास करना है? इसके लिये हमें भारतीय संविधान सभा की बहसों का रूख करना होगा।

'संविधान सभा' में जब पिछड़े वर्गों अर्थात दलितों, अनुसूचित जनजाति को आरक्षण प्रदान करने की बात चली तो डॉ० भीमराव अंबेडकर के तर्क मुख्यत: यही थे कि चूंकि इतिहास में 'इन वर्गों ने सदियों से वर्जनाओं, बंदिशों एवं भेदभाव का सामना किया है अत: निश्चित रूप से यह तय है कि संसाधनों तक पहुँच हो या नीति निर्माण; शिक्षा हो या अन्य मूलभूत सेवाओं तक पहुँच के सन्दर्भ में ये समुदाय ~~हमेशा~~ हमेशा पिछड़े रहे हैं। इस परिस्थिति में इन्हें बिना आरक्षण दिये इनसे यह उम्मीद

रखना कि ये शिक्षा व चुनावी प्रतिस्पर्द्धा में साधन-सम्पन्न ऊँची जातियों से बराबरी कर लेंगे तो यह एक भ्रम मात्र है। इसी कारण असमान के साथ असमान व्यवहार करने के रूप में इन्हें आरक्षण प्रदान किया जाना चाहिये।

इसी सन्दर्भ में जब हम किसी असमान को समान बनाने का प्रयत्न करते हैं तो इसके निम्न निहितार्थ होते हैं-

प्रथम स्तर पर यह उच्च वर्गों द्वारा असमान वर्ग की स्थितियों का उचित अध्ययन न कर उन्हें विकास की प्रक्रिया से वंचित करना है। आज भारत सरकार में सचिवों के स्तर पर केवल 4 पद आरक्षित समुदाय (SC व ST) के हैं तो इससे यही जाहिर होता है कि उपर्युक्त पदों पर पदोन्नति में आरक्षण के अभाव में ये परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई है।

दूसरे स्तर पर असमान वर्ग

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

में विद्यमान हीनता ग्रन्थि को मजबूत करता है। उदाहरण के लिये यदि किसी महाविद्यालय में जूते व सूट-बूट को ही सभ्यता की निशानी मान लिया जाये तो एक गरीब छात्र के मस्तिष्क में ये मानदंड हीनता ग्रन्थि ही पैदा करेंगे।

तीसरे स्तर पर निम्न वर्ग की दुर्दशा पर व्यंग्य करने के समान हो जाता है। चाहे भूमिका का विकलांग व्यक्ति का सामान्य से दौड़ लगाने का उदाहरण हो या एक महिला से पुरुषों के समान वज़न उठाने को कहना - दोनों स्तरों पर ही प्राकृतिक सीमाओं को नज़रअंदाज करना, उन पर व्यंग्य करने के समान ही है।

चौथे स्तर पर यह उच्च वर्ग में कर्त्तव्यपालन भावना व संवेदना को कम करता है क्योंकि असमानता के निहित कारणों की विवेचना किये बिना निम्न वर्ग को उच्च वर्ग के ~~सम्मान~~ समान प्रदर्शन करने

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को कहना जड़ संवेदनहीनता का उदाहरण है।

उपर्युक्त समस्त कारणों से कहा जा सकता है कि असमान के साथ असमान व्यवहार किया जाना चाहिये। भारतीय संविधान में भी सकारात्मक भेदभाव के रूप में यही सिद्धान्त को ~~अनु~~ अपनाया गया है।

उपर्युक्त चर्चा के बाद इस बात को भी तवज्जो दी जानी चाहिये कि समान के साथ समान व्यवहार के बजाय असमान के साथ असमान व्यवहार क्यों किया जाए? इसकी सार्थकता क्या है? और आधुनिक समाज में किन रूपों में इस सिद्धान्त को देखा जा सकता है।

असमानता को मिटाने के लिये जब सकारात्मक कार्यवाही, आरक्षण, वर्ग विशेष नीतियाँ बनाई जाती है तो उनका मूल औचित्य डॉ॰ भीमराव अंबेडकर के विवेचन से समझा जा सकता है। उनके अनुसार

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

आधुनिक युग में किसी भी वर्ग को समता का दर्शन कराने के लिये दो उपाय जरूरी है। एक तो उस वर्ग की शिक्षा तक पहुँच हो और दूसरा उस वर्ग के पास नीति-निर्माण व प्रबंधन की शक्ति हो। इन दोनों शक्तियों से सुसज्जित होकर ही कोई वर्ग उन्नति व समानता को प्राप्त कर सकता है। आरक्षण रूपी सिद्धान्त के पीछे यही तर्क विद्यमान है।

"ये फूल मुझे विरासत में नहीं मिले हैं,
तुमने मेरा कांटों भरा बिस्तर नहीं देखा है।"

इसी प्रकार के उदाहरण हमें अन्य स्तरों पर दिखाई देते हैं जैसे पंचायतों के स्तर पर महिलाओं का आरक्षण हो; महिलाओं को विभिन्न योजनाओं के तहत आर्थिक लाभ देना हो, दिव्यांगों को पेंशन आदि प्रदान करने जैसे सभी कदम इसी अवधारणा पर आधारित है।

भारत के संविधान में भी सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक न्याय की बात की गई है तो इसके साथ-साथ 'असमान व्यवहार' की भी बात की गई है। संविधान का अनुच्छेद 14 जहाँ विधि के समक्ष समता की बात करता है तो उसमें भी न्यायालयों द्वारा आनुपातिकता के सिद्धान्त का अनुपालन किया जाता है।

इसी प्रकार विशिष्ट रूप से अनुच्छेद 15 (4), अनुच्छेद 16 (4) में ऐसे प्रावधान है जो सशक्तिकरण को प्रोत्साहन प्रदान करते हैं। संविधान के अनुच्छेद 41 व 46 के साथ-साथ 332, 336 आदि भी उपर्युक्त सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं।

अंतिम प्रश्न है कि अन्य किन प्रयासों द्वारा असमान चीजों को समान बनाने की प्रवृत्ति को रोका जा सकता है? इसका सीधा व स्पष्ट उत्तर मूल्यों व आदर्शों

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के प्रक्षेपण में छिपा है। उच्च वर्ग को संवेदना, न्याय, सहानुभूति, करुणा, सेवा भावना जैसे मूल्यों से सुसज्जित करना होगा। इसके लिये साहित्य व शिक्षा का प्रयोग करना ही होगा। प्रेमचन्द की कहानी 'सद्गति' जहाँ दलित समस्याओं को उठाकर संवेदना प्रसार करती है तो वहीं नारी विमर्श की लेखिकाएँ जैसे मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती की रचनाओं का प्रयोग लैंगिक संवेदना को जागृत करने में किया जाना चाहिये।

"तन के भूगोल से परे
मन की गांठे खोलकर कभी पढ़ा है तुमने
एक स्त्री के मन को
अगर नहीं!
तो क्या जानते हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में।"

अन्य स्तरों पर निम्न वर्ग को मनोवैज्ञानिक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

रूप से सशक्त बनाना व उसका आत्म-विश्वास जाग्रत करना आवश्यक है। समाज के स्तर पर समतामूलक समाज के मानक तय करने होंगे जो प्रसिद्ध दार्शनिक जॉन रॉल्स के 'न्याय सिद्धान्त', अमर्त्य सेन के 'कैपिसिटी एप्रोच', महात्मा गांधी के 'अंत्योदय से सर्वोदय' पर आधारित हो।

अतः निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि समानता को शत प्रतिशत प्राप्त कर लेना 'यूटोपिया' है क्योंकि हर मनुष्य अपने मन के स्तर पर, शरीर के स्तर पर व मस्तिष्क के स्तर पर अद्वितीय है। इन्हीं विविधताओं को सम्मान भाव से देखते हुए प्रत्येक मनुष्य को साथ्य समझना चाहिये, समाज को अधिकाधिक समतामूलक ~~समझना~~ बनाना चाहिये। प्रयास प्रत्येक स्तर से होने चाहिये - चाहे वह राजनीतिक स्तर हो या आर्थिक, सामाजिक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हो या सांस्कृतिक, उच्च वर्ग के स्तर पर हो या निम्न वर्ग के स्तर से, बस प्रयास जारी रखने होंगे। असमानता एक जटिल समस्या है। इसके दुष्प्रभावों से मानव जाति को बचाने के लिये प्रत्येक मनुष्य को अथक प्रयास करना ही होगा। जैसा कि एक कवि ने कहा है-

"इस पथ का उद्देश्य नहीं है,
शांत भवन में टिक रहना,
बल्कि पहुंचना उस सीमा तक
जिसके आगे राह नहीं।"

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

"ऊपर सब कुछ शून्य-शून्य" "न हो निराश न करो मन को कुछ काम करो, कुछ काम करो।"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

"प्रतिमाओं नहीं, आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता ही समय की मांग है।"

idols → भगवान की मूर्तियां ① गणेश चतुर्थी विसर्जन 'oh my god' 'पी.के.'

② 'महात्मा गांधी', नेहरू

③ परलौकिक आस्था v/s इहलौकिक आस्था (मानववाद)

④ प्रतिमा

आदर्श कैसे हों? ① गीता ② कांट ③ उपयोगितावाद — संविधान → प्रस्तावना

सत्यनिष्ठा, ईमानदारी,

वर्तमान समय — ① मूल्यों का क्राइसिस → Post truth की अवधारणा

② 'पार्टी पालिटिक्स' — "जातिवाद का concept"

③ पार्टी है विवेकानंद, कलाम,

राजा राममोहन राय →

'श्रद्धा' :- प्रतिमाओं का महत्व → श्रद्धा → जनसामान्य की प्रेरणा

→ 'आदर्श'
→ धर्मविहीन नैतिकता को
→ आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ाती है।
→ शून्य सिद्धान्तों में कोई प्रवृत्तिकारी शक्ति नहीं होती।

प्रशासक के स्तर पर — वल्लभभाई पटेल

आर्थिक स्तर पर = रूस, चीन,

सामाजिक स्तर पर - "अम्बेडकर जी की मूर्तियाँ"

• धार्मिक स्तर पर
• धार्मिक सम्मान

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

धार्मिक स्तर पर

" संदेश यहाँ नहीं मैं स्वर्ग का लाया
मैं भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया। " ★

मूर्तिपूजा

पुस्तकें - 'Idol का प्रतीक'
— 'धार्मिक पुस्तकें' - पूजा = 'पवित्र'
— आदर्श : ISIS,

समस्याएँ : 'from मूर्तिपूजा'

"समाधान पक्ष"

① रावण,
② कंस
③ दुर्योधन
④ राक्षस
⑤ 'बालि'
⑥ 'शम्भित'
⑦

"समय मांगता है मुझसे हिसाब"

लिवर्टी

→ दलित विमर्श → शिक्षा, राजनीति, आर्थिक स्तर

वस्तु

① दिव्यांग
② महिला
③ वृद्ध
④ प्रकृति →

साधन